शिमला जनपद के संस्कार तथा उनसे जुड़े गीतों का अध्ययन

सरिता कुमारी[1]

संस्कार हमारे समग्र जीवन की बुनियाद है। साधारणतः संस्कार शब्द से अभिप्राय शुद्धता एवं परिष्कार से है। संस्कृत साहित्य में संस्कार का प्रयोग शिक्षा संस्कृति प्रशिक्षण, सौजन्य, स्वरूप, परिष्करण, शोभा एवं धार्मिक विधि–विधान आदि अर्थों में हुआ है।

आजकल शिमला जनपद में सोलह संस्कारों में से सभी का प्रचलन नहीं है। प्राचीन समय में सभी संस्कार विधिवत रूप से मनाए जाते थे। परंन्तु आधुनिक युग में कई संस्कार जैसे– गर्भाधान, प्रसवन, समतोन्नयन, निष्क्रमण, वेदारम आदि प्रायः लुप्त हो गए हैं। शिक्षित समाज में जो बाकि संस्कार रह गए हैं, उनको मानने का प्रचलन दिखाई पड़ता है। परंतु सामान्य जीवन में तो जन्म संस्कार, मुण्डन संस्कार, विवाह संस्कार तथा मृत्यु संस्कार विशेष रूप से देखने को मिलते हैं।

जन्म संस्कारः

शिमला जनपद में जब शिशु का जन्म होता है तब आस–पड़ोस की स्त्रियां इकट्ठी हो जाती है। पुत्र जन्म से पूर्व गर्भवती स्त्री की विशेष–रूप से देखभाल की जाती है तथा उसे घर के बाहर जाने की अनुमति नहीं दी जाती। गर्भवती स्त्री को शमशानघाट, शव, भीड़–भाड़ वाले स्थान पर भी नहीं जाने दिया जाता। उसे चंद्रग्रहण, सूर्य ग्रहण आदि देखने की अनुमति नहीं दी जाती।

जब स्त्री को प्रसव पीड़ा आरंभ हो जाती है तो उसे घर के किसी सुरक्षित कमरे में रखा जाता है, जिसे स्थानीय बोली में ओबरा या पांड कहा जाता है, लेकिन समय की आधुनिकता के कारण अब लोग प्रसव कराने के लिए स्त्री को अस्पताल में ही ले जाते हैं। शिशु प्रसव कराने के लिए स्त्री को अस्पताल में ही ले जाते हैं। शिशु जन्म पर गांव की महिलाएं स्त्री को मां बनने की बधाईयां देती है तथा ग्यारह दिनों तक स्त्री को इसी कमरे में रखा जाता है। लोग इन दिनों को सूतक मानते है तथा स्थानीय बोली में इसी सकोड़ कहते हैं।

समाज में पुत्र के जन्म को अति शुभ माना जाता है। पुत्र के पैदा होने पर मां को अति सौभाग्यशाली समझा जाता है। वर्तमान समय में पुत्र–पुत्री जन्म में कोई भेद नहीं किया जाता। पुत्र–पुत्री के जन्म पर पूरा गांव खुशियां मनाता है। ग्यारह दिन के पश्चात् सूतक स्त्री को मुख्य घर में लाया जाता है तथा उस दिन घर में हवन तथा पूजा पाठ करके घर को शुद्ध किया जाता है। मामा द्वारा पुत्र के पिता को जूब घास के साथ पैसे दिए जाते हैं। जूब को पिता रख देता है तथा पैसों को दूगना करके लड्डू व मिठाई सहित वापस कर देता है।जहां तक इस अवसर पर संस्कार गीतों की प्रथा का प्रश्न है, प्राचीन समय में तो शिशु के जन्म पर गीत गाए जाते थे, लेकिन आधुनिक समय में यह प्रथा बिल्कुल समाप्त हो गई है। साथ ही साथ वे गीत भी लुप्त हो गए हैं जो इस अवसर पर गाए जाते होंगे। शिशु के जन्म से संबंधित गीत इस प्रकार हैः–

मेरे छोटुआ जोलम लौआ, मेरे छोरा राम जोलम लौआ,
खोडे जाओ दाईयो–भाईयो, आगणे जो तेरे महाराज खौड़े।
ढोल नगाड़े बाजण बाजै,होर रूण–झुण जंत्र जोड़े जी।

स्वरलिपि–नाटी ताल

सा रे मे रे	ग रे छोटु आ	ग रे जौल म	सा लौ आ
सा रे मे रे	ग रे घौ रौ	ग रे रा म	रे सा जोलम लौ आ

1 पीएच0–डी0 शोध–छात्रा, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला–5

भावार्थः

प्रस्तुत गीत जन्म संस्कार पर गाया जाता है, जिसमें पुत्र जन्म को श्रीराम भगवान के समान माना जाता है तथा आस–पड़ोस के भाईयों (गांव के लोगों) द्वारा नाच–गान तथा ढोल–नगाड़े के साथ जन्म के उपलक्ष्य को मनाया जाता है।

मुण्डन संस्कारः

शिमला जनपद के लोक–जीवन में मुण्डन संस्कार के अंतर्गत बालक के पैदा होने के पश्चात् पहली बार बाल काटने का कार्य सम्पन्न किया जाता है। यहां मुण्डन संस्कार को स्थानीय बोली में 'जौटी रेहालना' कहा जाता है। बालक के जन्म तथा नामकरण के पश्चात् मुण्डन संस्कार किया जाता है। इस संस्कार की रस्म एक–तीन या कभी–कभी बालक के पांचवें वर्ष में की जाती है, लेकिन अधिकतर एक साल के अंदर ही यह रस्म पूरी की जाती है। लोक जीवन में बालक का ही मुण्डन संस्कार किया जाता है। मुण्डन संस्कार की परम्परा भी अति प्राचीन है। वैदिक काल से आधुनिक काल तक यह संस्कार लोक जीवन का अभिन्न अंग रहा है। इस संस्कार के अवसर पर इस क्षेत्र में गीत गाने का प्रचलन नहीं है, परंतु यहां के लोक जीवन में यह संस्कार अवश्य किया जाता है। एक ही परिवार में इस संस्कार का निष्पादन विभिन्न रूपों में होता है। कभी–कभी लोग किसी कुल देवता या देवी के मंदिर में जाकर मुण्डन संस्कार करवाते है या कभी–कभी घर पर ही शिशु का मुण्डन वैदिक रीति से करते हैं।

विवाह संस्कारः

जिला शिमला में वैवाहिक रीति–रिवाज भी हिमाचल प्रदेश के बाकी क्षेत्रों से मिलते–जुलते हैं। पत्नी, पति की संगिनी एवम् महत्वपूर्ण साथी समझी जाती है। विशेषकर विवाह के अवसरों पर तीर्थ यात्रा एवं धार्मिक अनुष्ठानों पर पत्नी की महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त होता है।

विवाह का प्रथम चरण सगाई होता है। शिमला जनपद में सगाई की पहल लड़के के परिवार वालों द्वारा की जाती है। इसे क्षेत्रीय भाषा में 'बरनी' कहा जाता है। बरनी के लिए पंडित द्वारा शुभ दिन देखा जाता है। इस दिन लड़के के पिता तथा एक या दो अन्य सदस्यों के साथ लड़की वालों के घर जाते हैं। सगाई के रूप में लड़की को सोने की अंगूठी पहनाई जाती है तथा जबान पक्की करने के लिए घर के मुखिया को चांदी का रूपया या सोने की अशर्फी दी जाती है। यह परम्परा पुश्तों से लेकर चली आ रही है जो आज भी कायम है।

सगाई के कुछ महीनों पश्चात् विवाह की तैयारियां आरंभ हो जाती है। विवाह के लिए पंडित द्वारा शुभ दिन देखा जाता है। प्राचीन समय में इस क्षेत्र में विवाह के अवसर पर लड़के के घर केवल पांच लोग लड़की को बुलाने उसके घर जाते हैं। दुल्हे के रूप में लड़की को बुलाने के लिए चांदी या लोहे का छूरा भेजा जाता है। यह अब भी अधिकतर प्रचलित है। इसके साथ ही अगले दिन लड़की को लड़के के घर लाया जाता है। दुल्हा अपने घर से निकलकर आधे रास्ते में आकर दुल्हन का स्वागत करता है एवम् उसे अपने घर लाता है। वेदी की सारी रस्में दुल्हे के घर पर ही सम्पन्न होती है।

समय के परिवर्तन के साथ वर्तमान में अब बरात का रिवाज आरंभ हो गया है। लड़की वाले बरात तथा दुल्हे को बुलाने उसके घर जाते हैं। अगले दिन पूरी बरात लड़की वालों के घर पहुंच जाती है। विवाह की सारी रस्में लड़की के घर पर ही पूरी होती हैं। कन्यादान के पश्चात् पूरी बरात लड़के वालों के घर पहुंचती है। सभी बारातियों का खूब आदर सत्कार किया जाता है। उन्हें मांस, मदिरा एवम् सभी प्रकार की खाद्य सामाग्रियों से प्रसन्न किया जाता है। शिमला जनपद में विवाह के समय गाए जाने वाले संस्कार गीत अब प्रायः लुप्त ही हो गए हैं। प्राचीन समय में तो यह गीत बहुत अधिक मात्रा में प्रचलित थे, परंतु अब यह गीत अपना अस्तित्व ही खो गए हैं। विवाह संस्कार में गाए जाने वाले कुछ संस्कार गीत इस प्रकार हैंः–

कांगणा बानो सनागणा,
आज बानो लौगणा रे धागे।
कांगणा घड़े सनागेणा,
बाबुए तेरे सुने गौड़े धागे।
स्वरलिपि–नाटी ताल

प नि स– स कां गणे बाऽ नोऽ	रे स, रे स, स ऽ ना ऽ	रे स – नि ग ऽ ऽ णा
रे स– रे सा नि आ जऽ बा नो ऽ	प ध नि सा लौ ग ना रे	रे स, स सा सा ध ऽ ऽ गे ऽ

यह पूरा गीत इसी धुन में गाया जाता है तथा अनिबद्ध रूप में गाया जाता है।

भावार्थः–

इस गीत में लगन के समय का वर्णन किया गया है, जिसमें बनों के हाथ में सोने का कंगना तथा अंगूठी पहनाई गई है तथा उसके गले में सोने का मंगलसूत्र पहनाया जाता है।

तेल बटणा गीतः–

आए बेशें मामुआ भाई के कां गोणा, पानाएया कांगोणा,
पानाएया मामुए सीरे तेला सजोएया।

स्वर लिपिः–

ध स – ग र, ग रे, स ग रे स – – रे स ध
आ ए ऽ बे ऽ शे ऽ मा म आ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ
सा सा रे सा, ध सा–, ग रे, ग रे सा – सा सा
भा ई के ऽ, कां गो ऽ णा ऽ ऽ पा ऽ ना ए।

यह पूरा गीत इसी धुन में गाया जाता है.....

विदाई गीतः–

उतरा कू निकली काली बादली,
पछमा कु हुआ घन घोरा।
खोड़े ता रूको ढोले जामाणियों,
देखणे देओ बाबुआ रो देशा।
छुटी ता गोई साचणी सौगणी,
छुटी गोआ घुण्डिया रो खेला।

स्वर लिपि

प म म नि उ त रा कु	सा रे सा सा नि क लीऽ का	रे सा ली ऽ	रे सा रे सा बा ऽ द ली
प नि स रे प छि मा कुऽ	सा नि प छु ओ ऽ	प नि सा रे घ व घो ऽऽ	रे सा नि रा ऽ ऽ

भावार्थः–

जब दुल्हन की डोली विदा करते हैं, तो उस समय यह गीत गाया जाता है। गीत में दुल्हन के विदा होने की व्यथा को दर्शाया जाता है, जिसमें दुल्हन अपने घर, परिवार तथा बचपन की सब यादों को छोड़कर विदा होती है तथा बारातियों को रूकने के लिए कहती है कि मुझे अपने पिता के घर को अच्छे से देखने दें।

इसी तरह का एक विदाई गीत और भी है जो इस प्रकार से हैः–

शेई नाई बेटिया, जोए नाई मूंटू रे ठाणाः
किया डेवा–भाई तेरो, देंदो के नाम कन्या केदाणः
रोए नाई बेटिया, पाए नाई माचीं जू शरापा
तिएं पुछे बीए माता जियां तेरा कर्मा छापा।
रोए नाई बेटिया, खोए नाई टीका संदूरा,
आज छूटो भाई–बापा आज हुए देवली खू–दूरा।

स्वर लिपिः–

प प प नी सा, रे सा सा नि सा सा नि नि प नि नि प
रो ए ना ऽ ई ऽ, बे ऽ रि ऽ ऽ ए खो ऽ ए ना ई
प प प नी सा – रे सा, सा नि सा– नि सा सा
जो ए ना ऽ ई मूं ऽ टू ऽ ऽ रो ऽ ठा ण

यह विदाई गीत है जो दुल्हन की सखी सहेलियों द्वारा उसकी विदाई के समय गाया जाता है। यह गीत अनिबद्ध रूप से गाया जाता है।

मृत्यु संस्कारः–

शिमला जनपद में मृत्यु संस्कार से संबंधित संस्कार भी हिमाचल प्रदेश के अन्य क्षेत्रों से मिलते जुलते हैं। इस क्षेत्र में मृत्यु तथा मृतक से संबंधित संस्कार यद्पि धार्मिक कर्मकांडो से मुक्त है, लेकिन किसी भी मृत्यु के पश्चात् सामाजिक रीति रिवाज अति महत्वपूर्ण एवम् अनिवार्य है।

व्यक्ति जब अंतिम सांसे गिन रहा होता है या मृत्यु को प्राप्त हो जाता है तो उसके मुंह में पंचरत्न डाल दिया जाता है। इसे स्थानीय बोली में 'परजतम या पौहजौतन' कहा जाता है। उसके बाद चांदी का एक टुकड़ा उसके मुंह में डाल दिया जाता है। शव को स्नान करवाने के पश्चात् विशेष प्रकार के सफेद वस्त्र पहनाए जाते हैं। जिसे कौफनी या जागरी कहा जाता है। मृतक के दोनों हाथों को छाती पर रखा जाता है। मृत्यु के पश्चात् तीन या पांच बारी शंख को एक विशेष ध्वनि के साथ बजाया जाता है। शंख की इस विशेष ध्वनि को सुनकर गांव वाले यह अनुमान लगा लेते हैं कि मौत किसी दिशा या गांव में हुई है और मृतक की जानकारी प्राप्त की जाती है। इसी बीच बढ़ई आकर अर्थी तैयार कर लेता है, जिसे स्थानीय बोली में पौलगी कहा जाता है।

शिमला जनपद में मृत्यु संस्कार पर गीत नहीं गाए जाते। प्राचीन काल में मृत्यु संस्कार पर गीत गाए जाते थे, जो आधुनिकता के कारण समाप्त हो गए हैं। मृतक के गुणों एवं उसके द्वारा किए गए उपकारों का व्याख्यान किया जाता है तथा उसकी कमी महसूस करके दुःख व्यक्त किया जाता है। आस–पास के सभी लोग मृतक के परिजनों को सांत्वना देते हैं। मृत्यु संस्कार को अधिक विधि विधानानुसार सम्पन्न किया जाता है। इस प्रकार मृत्यु संस्कार की प्रक्रिया समाप्त हो जाती है।

इस प्रकार कहा जा सकता है कि शिमला जनपर के संस्कार तथा उनसे जुड़े गीतों का लोक जीवन में विशेष महत्व है। यहां के गीतों में भाव, अनुभव तथा मनोभाव प्रतिलक्षित होते हैं। यहां के संस्कार गीतों में जीवन की सरलता, रीति–रिवाज, परम्पराएं, रहन–सहन, खान–पान, पारिवारिक–सामाजिक सम्बन्ध तथा समकालीन संस्कारों की यथार्थ रूप में अभिव्यक्ति पाई जाती है। शिमला जनपद के गीत सभी प्रकार के रसों से ओत–प्रोत हैं। अतः यहां के संस्कार गीत हमारी संस्कृति तथा समाज को दृढ़ करने में आज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं